मीडिया समन्वय कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 2 फरवरी 2017

जेएमआई में दलित साहित्य पर परिचर्चा

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आज " दलित साहित्य " पर परिचर्चा हुई जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में अमेरिका के वेस्टर्न विश्वविद्यालय में हिन्दी लिटरेचर एंड साउथ एशियन स्टडीज विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर सुश्री लौरा आर ब्रुएक ने अपनी बात रखी।

धारा प्रवाह हिन्दी में बोलने वाली प्रो ब्रुएक ने कहा कि यह बहस महत्वपूर्ण नहीं है कि क्या दलित ही दलित साहित्य लिख सकते हैं और गैर दलित नहीं। उन्होंने कहा अगर ऐसा हुआ तो फिर मर्दो के बारे में महिलाओं को लिखने का अधिकार नहीं होगा और मनुष्य को पशुओं के बारे में लिखना अनुचित होगा।

उन्होंने दलित साहित्य से संबंधित एक मशहूर पुस्तक भी लिखी है जिसका नाम है , " रिटारीकल इमेजिनेशन आफ हिन्दी दलित लिटरेचर " । उन्होंने दिल्ली आधारित हिन्दी लेखक उदय प्रकाश और अजय नवारिया के कार्यो पर विशे अध्ययन किया है।

यह चर्चा इस बात पर केन्द्रित रही कि दलित साहित्य क्या है। दलित साहित्य कौन लिख सकता है।

सुश्री ब्रुएक ने कहा कि किसी को विशेष विषय पर साहित्य लिखने से केवल इसलिए नहीं रोका जा सकता कि वह उस क्षेत्र से जुड.ा नहीं है। यह सीमा तय नहीं होनी चाहिए कि दलित साहित्य केवल दलित समाज का व्यक्ति ही लिखेगा।

उन्होंनें कहा, महात्मा गांधी और मुंशी प्रेमचंद ने दलितों के बारे में काफी कुछ लिखा है लेकिन उन पर आरोप हैं कि इन लोगों ने दलितों से केवल सहानुभूति जताई है और उनके जीवन को बदलने तथा मनुष्य .. मनुष्य के बीच भेद करने की व्यवस्था को पूरी तरह ध्वस्त

करने की दिशा में काम नहीं किया। उन्होंने बताया कि 1990 के दशक से दलित साहित्य बढे पैमाने पर लिखा जाने लगा है।

जेएमआई में हिन्दी के प्रो और '' हैलो प्रेमचंद '' जैसे विख्यात उपन्यास के लेखक अजय नावरिया ने कहा कि यह सवाल हमेशा से उठता रहा है कि गैर दलित लेखक, दलित साहित्य क्यों नहीं लिख सकते । उन्होंने कहा, लेकिन इस सवाल के जवाब में ही यह सवाल भी उठता है कि उन लोगों ने पहले दलित साहित्य का सृजन क्यों नहीं किया ।

अपने तर्क को आगे बढाते हुए नावरिया ने यह दावा भी किया कि गैर दलित लेखक दलितों के आरक्षण और धर्म परिवर्तन का समर्थन करने तथा जाति प्रथा को पूरी तरह ध्वस्त करने के मुददों को आगे नहीं बढा सकते हैं और यही उनकी सबसे बडी सीमा है।

जेएमआई के नोआम चोमस्की परिसर में ''सामाजिक बहिगर्मन एवं समायोजन नीति अध्ययन केन्द्र :सएसएसईआईपी : द्वारा आयोजित इस परिचर्चा में छात्रों और अध्यापकों ने हिस्सा लिया। इनमें सामाजिक विज्ञान विभाग के डीन मुहम्मद शफीक, लातिनी अमेरिका अध्ययन केन्द्र की निदेशक डा सोनिया, एसोसिएट प्रोफेसर डा पदनाभन समरेन्द्र, डा अरविंद भी शामिल हैं।

प्रो साईमा सईद
डिप्टि मिडिया कोआरडिनेटर
मोबाईल 9891227771